ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

# गाँधीवादी आन्दोलन में दलितों की भूमिका – बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में

प्रेमचन्द्र साहू
भाोध छात्र–इतिहास
म.गॉ.चि.ग्रा.वि.वि.चित्रकूट सतना (म.प्र.)

प्रत्येक समाज में मुख्य रूप से दो वर्ग पाये जाते है। एक सम्पन्न वर्ग जिसे पूँजीपति वर्ग या अभिजात्य वर्ग कहा जाता है तथा दूसरा विपन्न वर्ग जिसे श्रमिक वर्ग या दर्बल वर्ग या दलित वर्ग या सर्वहारा के नाम से सम्बोधित किया जाता है। कमजोर वर्ग हमेशा पूँजीपति या अभिजात्य वर्ग के आधिपत्य में रहा है। इस आधिपत्य के कई तरीके हो सकते है जैसे कानून, पुलिस, सेना, नौकाशाही, धन, जाति, धर्म, रीतिरिवाज आदि।

इतिहासकारों का मत है कि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में इस कमजोर वर्ग ने अपने संघर्ष खुद लड़े किन्तु इतिहास के मुख्य धारा ने इनकी हमेशा अवज्ञा की। राष्ट्रीय आन्दोलन के लिये केवल राष्ट्रीय नेता ही उत्तरदायी नही थे बल्कि इसमें समाज के निम्नस्तरीय समूहों का भी सकारात्मक योगदान रहा है। इन सबके बावजूद अपने लम्बे इतिहास में यह अधिनस्थ समूह राज्य तथा विशिष्ट वर्गों की चालबाजियों के शिकार रहे हैं। इन्ही परिस्थितियों में समाजशास्त्रियों, आधुनिक इतिहासकारों ने इन समूहों के प्रति हुए सामाजिक अन्याय को समझने तथा मुख्य धारा से अलग रखने के कारणों को जानने का अवसर दिया है। दलित किसी एक विशेष जाति का सूचक नही है बल्कि यह समाज का एक ऐसा वर्ग है जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आधार पर दबा कुचला है। इनकी कहानी उतनी ही परानी है जितनी भारतीय हिन्दू संस्कृति है। समाज के बहुसंख्यक को सर्वथा पतित, वंचित, दलित, घृणित एवं अछूत बताकर सदियों से इनके साथ पाश्विक वर्ग नारकीय व्यवहार करता रहा है। दलित वर्ग समाज का सबसे उपेक्षित वर्ग रहा है। सुयोग्य एवं समर्थ होने पर भी उसकी गणना निम्नवर्ग में की जाती रही है। भारतीय समाज का सबसे वंचित वर्ग दलित है, जिसे बहुत सारे आर्थिक एवं सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया जिससे उनकी स्थित समाज में अति भिन्न हो गई। 1950 ई0 में सर्वप्रथम इस वर्ग को अनुसूचित जाति के नाम से सम्बोधित किया गया। डी0एन0 मजूमदार के अनुसार ' दलित वर्ग वह है जो विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक निर्योग्यताओं से पीड़ित है, जो परमपरागत रूप से उच्च जाति के द्वारा सामाजिक दबाव व धारणा से सम्बन्धित है।

शोषण प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है। अर्थिक शोषण श्रमिको की उन्नति के मार्ग में अवरोध है। इससे व्यक्ति की निष्ठा को चोट पहुँचती है। गाँधी जी ने गरीबी की इस वर्ग को दरिद्रनारायण की संज्ञा दी। यही दरिद्रनारायण

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

ही समाज का सर्वहारा वर्ग था, जिसे दलित नाम दिया गया। गाँधी जी ने इस वर्ग को हरिजन नाम देकर उनकी सामाजिक महत्ता व प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

गाँधी जी ऐसी व्यवस्था के विरोधी थे जिसमें कुछ ही लोग अमीर होते हैं और अधिकांश जनता जीवन के लिये दो जून की रोटी भी नही प्राप्त कर सकती। उन्होंने निर्धनतम के हित की बात की। उनका मत था एक वकील, एक डॉक्टर या शिक्षक की आमदनी एक भंगी से अधिक नही होनी चाहिए। तभी समाज में श्रम की प्रतिश्ठा कायम होगी। इसके अलावा सुख और शान्ति का दूसरा कोई मार्ग नही है।[1] गाँधी जी का विचार था कि औपनिवेशिक साम्राज्यवादी वृत्ति औद्योगिक एकाधिकार राजनीतिक विकास को दुश्चक्र में डालता है और राष्ट्र का नैतिक पतन करता है। गाँधी जी ने पूँजीवादी उद्योगपतियों के द्वारा अदृश्य एवं सूक्ष्म हिंसा के विरूद्ध रूस एवं अन्य देशों में मजदूरों के द्वारा लोमहर्शक और हिंसक क्रान्ति देखी थी। अतः वे नही चाहते थे कि भारत में इसकी पुनरावृत्ति हो।[2]

इतिहास के आइने में देखे तो ज्ञात होता है के भारतीय स्वंतत्रता आन्दोलन में दलितों और आदिवासियों का योगदान कम नही था। अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराने में न जाने में कितने दलितों और आदिवासियों ने जान की बाजी लगा दी, अपना लहू बहाया और शहीद हो गये। लेकिन इतिहास में दलित सामाज की भूमिका को पूरी तरह हाशिए पर रखा गया। परिणामस्वरूप साधारण जनता आजादी के आन्दोलन में दलित समाज के देश भक्तों की भूमिका से अनजान ही रही लेकिन अब यह सच्चाई सामने आने लगी है।

वैसे तो देश की आजादी का पहला स्वतंत्रता संग्राम 1857 का माना जाता है। लेकिन अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह का बिगुल 1780–84 में ही बिहार के संथाल परगना में तिलक माँझी की अगुवई में शुरू हो गया था। तिलक माँझी युद्ध कला में निपुण और अच्छे निशानेबाज थे। उसने ताड़ के पेड़ पर चढ़ कर तीर से कई अंग्रेजो को मोत के घाट उतार दिया था। इसके बाद महाराष्ट्र, बंगाल और उड़ीसा प्रान्त में दलित आदिवासियों ने अंग्रेजो के खिलाफ बागवत शुरू कर दी थी। सिद्धू संथाल और गोची माँझी ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। इसी तरह 1804 और 1807 में छतारी नवाब नाहर खाँ के मित्र उदइया ने अकेले सैकड़ों अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया था, बाद में उसे अंग्रेजों ने फाँसी दे दी।

1857 के विद्रोह के सिपाही मंगल पाण्डेय को चर्बी युक्त कारतूसों के प्रयोग की जानकारी मातादीन नामक दलित ने दी थी। अंग्रेजों ने मंगल पाण्डेय के साथ–साथ मातादीन को भी फाँसी दी थी। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शहीद होने वाले चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर ने फिरंगियों से कड़ी टक्कर ली। वे 26 मई 1857 को सोरो (एटा) की क्रान्ति की ज्वाला में कूद पड़े। फिर अंग्रेजों ने दोनों दलित क्रान्तिकारियों को पेड़ में बाँधकर गोलियों से उड़ा दिया। जौनपुर की क्रान्ति में जिन 18 क्रान्तिकारियों को बागी घोषित किया गया, उनमें प्रमुख बांके चमार था, जिसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिये ब्रिटिश सरकार ने उस जमाने में

50,000 रू0 का इनाम घोषित किया था। अंत में बांके चमार को गिरफ्तार करके मृत्युदण्ड़ दे दिया गया। विरांगना झलकारी बाई कोरी सामाज से थी जो रानी लक्ष्मीबाई का साथ देते समय अंग्रेजो के विरूद्ध संघर्ष करते हुए शहीद हुई। विरांगना ऊदादेवी पासी समाज से थी। वह बेगम हजरत महल की महिला सैनिक दस्ते की कप्तान थी। उनके पति मक्का पासी लखनऊ के चिनहट में अंग्रेजों से लड़ते हुए मारे गये। ऊदादेवी ने 16 नवम्बर 1857 को सिकन्दर बाग (लखनऊ) में एक पीपल के पेड़ पर चढ़कर 36 अंग्रेज फौजियों को गोलियों से भून दिया और बाद में खुद शहीद हो गई। जलियावाला हत्याकाण्ड़ का मुख्य दोषी माइकल ओ डायर को मारने वाले क्रान्तिकारी ऊधम सिंह दलित समाज से थे। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में दलित वर्गो के देशभक्तों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और पूरे देश में अपनी गिरफ्तारियाँ दी। नमक सत्याग्रह आन्दोलन में दलित वर्ग के लोगों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से शुरू पैदल मार्च में दलित वर्ग के तमाम लोग शामिल हुए जिनमें मुख्य रूप से बलदेव कुमार कुरील थे। नमक सत्याग्रह आन्दोलन में ही 103 दलितों पर सजा के साथ अर्थिक दण्ड लगाया गया। 1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में उत्तर प्रदेश के कई जिलों से 93 दलितों ने अपनी कुर्बानी दी जिनके नाम आज भी सरकारी अभिलेखों में दर्ज हैं। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में तमाम दलित भी शामिल थे। कैप्टन मोहन लाल कुरील की अगुवई में हजारों दलित शामिल थे।[3]

गाँधीवादी आन्दोलन में बाँदा और चित्रकूट जनपद में भी सर्वहारा वर्ग में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। गाँधी जी के आह्वान पर श्री लक्ष्मीनरायण अग्निहोत्री समाज के निम्न तबके को अपने साथ खड़े करने में सफल रहे। दलित समाज के लोग गाँधीवादी आन्दोलनों में बढ़–चढ कर भाग लिया, यातनायें सही और जेल गये। गुप्तचर की डायरी से 12 अप्रैल 1930 की घटना का जिक्र मिलता हैं – ''बाबा रामचन्द्र गिरवाँ गया और शाम को वापस आया। झण्ड़ा खद्दर भण्डार से उठा चौक होते हुये डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में गये, खड़े होकर गाना गाया, अलीगंज, घूम, सेठ विष्णुकरण के हाते में एक कमीज की होली जलाई गई। वहाँ से खाई पार घूमें। मुलवा चमार के मकान के सामने खतम किया। मुलवा चमार के चबूतरों में बैठे चमारों को बुलाया गया। उनको बाबा रामचन्द्र ने तथा कालूराम ने समझाया। मा0 नरैनन प्रसाद ने शराब पीने को मना किया और बेगारी देने को मना किया। इस पंचायत में कुँवर हर प्रसाद सिंह, सेठ विष्णुकरण, कालूराम गौड़, दुर्गा प्रसाद, गंगादीन चमार, भूरो महराज, मोतीलाल अग्रवाल और सब लड़के थे। मुनादी हुई की रामलीला मैदान में नमक कानून भंग किया जायेगा।''[4]

इसी प्रकार गुप्तचर की डायरी में 17 अप्रैल 1930 की घटना का जिक्र है कि–''चमारों के यहाँ, कुम्हारों के यहाँ वालन्टियर गये। कुछ असर नही हुआ। नरैनन प्रसाद, लक्ष्मी नारायण, सूरजबली ने रेल सत्याग्रह के लिये स्कीम सोचा टिकट का महसूल कम होना चाहिए।''[5]

इन घटनाक्रमों से निश्कर्ष निकलता हैं कि गाँधी जी के आह्वान से प्रेरित होकर जिले में समाज का निम्नतम वर्ग राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गया। पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री, कुँवर हर प्रसाद, बाबा रामचन्द्र, सेठ विष्णु करण आदि ने उनमें राजनीतिक जागृति पैदा की। इस वर्ग ने कपड़ों की होली जलाने, प्रभात फेरी निकालने, समाचार पत्रों को बाँटने और आन्दोलन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधी जी के बाँदा आगमन के बाद से तो इस वर्ग में उग्र राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। गाँधी जी का जयकारा और भारत माता की जय बोलने वालों की सर्वाधिक संख्या दलित वर्ग की थी।

सन्दर्भ :

1. महात्मा गाँधी, हरिजन पत्र, 23 अप्रैल 1947
2. पाण्डेय, एच.एल., गांधी नेहरू टैगोर एवे अम्बेडकर, पृ.सं.44
3. पत्रिका, दलित दस्तक, रूपेशल अरजरदी की लड़ाई के दलित नायक
4. द्विवेदी, चन्द्रधर, कामद क्रांति, पृ.सं.59–60
5. द्विवेदी, चन्द्रधर, कामद क्रांति, पृ.सं.60